an>

Title: Need to undertake research to explore the medicinal/Ayurvedic value of Tendu leaves.

श्री श्यामा चरण गुप्त (इलाहाबाद) ः बीड़ी की लपेट/रोल के लिए सिर्फ तेन्दू पत्ता का ही इस्तेमाल किया जाता है। क्या इसका कोई आयुर्वेदिक कारण है? क्योंकि पीपल, आम, केला, बरगद, महुआ, पलास आदि किसी और पत्ती से बीड़ी का निर्माण संभव नहीं होगा। तेन्दू पत्ता सिर्फ भारत की पहाड़ियों में ही पैदा होता है और सिर्फ भारत में ही इस्तेमाल होता है, वह भी सिर्फ बीड़ी में। बीड़ी भी सिर्फ भारतीय धूम्रपान है, बीड़ी का इस्तेमाल भारत के अलावा विश्व में और कहीं नहीं होता है।

क्या यह हर्बल स्मोकिंग है? क्योंक ऐसा सुना गया है कि तेन्दू पत्ता से बनी हुई बीड़ियों से कोई बीमारी नहीं होती है न ही कैंसर आदि होता है, क्योंकि इस बीड़ी से मातृ धुआं का इस्तेमाल होता है। अन्य तम्बाकू उत्पादों की तरह तेन्दू पत्ती या इससे बनी हुई बीड़ी न तो चूसते हैं न ही खाते हैं। अधिकांश जो लगातार बीड़ी पीते हैं, उनको भी कोई बीमारी नहीं होती है।

क्या इसी गुणवत्ता के कारण ही तेन्दू पत्ता का मूल्य 100 रूपए से 200 रूपए किलो होता है, जो अन्य वनोपजों से बहुत अधिक है। इसमें सरकारों को भी हज़ारों-करोड़ें का लाभ होता है।

तेन्दू पत्ती से सभी प्रान्तीय सरकारों का 10 हज़ार करोड़ रूपए की रेवन्यू की आय हो रही है। इतनी अधिक आय की यह पत्तियां हैं तो खाली जमीनों में इसका प्रयोग क्यों नहीं किया जा रहा है?

अतः सरकार से निवेदन है कि तेन्दू पत्ती की औषधीय गुणवत्ता का शोध कराया जाए और इससे होने वाले लाभों की भी जानकारी कराई जाए।